रेने देकार्त

रेने देकार्त जो कि दार्शनिक होने के साथ साथ एक सुप्रसिद्घ गणितज्ञ थे, वे दर्शन को विज्ञान में परिवर्तित करना चाहते थे। आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का जनक के रुप में इन्हें जाना जाता है, साथ ही साथ इन्होंने ज्ञान के लिए बुद्धि को सर्वोत्तम राह बताया, क्योंकि इसमें ज्ञान सार्वभौमिक व अनिवार्य होता है, रेने देकार्त (फ़्रांसिसी भाषा : René Descartes; लातिनी भाषा: Renatus Cartesius) एक फ़्रांसिसी गणितज्ञ, भौतिकी विज्ञानी, शरीरक्रिया विज्ञानी तथा दार्शनिक थे।

उनका जन्म ३१ मार्च १५९६ ई. को हेग में हुआ था। २१ वर्ष की आयु में शिक्षा समाप्त कर ये ओरेंज के राजकुमार मोरिस की सेना में भर्ती हो गए। यहाँ पर प्राप्त अवकाश को ये गणित के अध्ययन में व्यतीत किया करते हैं। इन्होंने कई युद्धों में भी भाग लिया। सेवॉय के ड्यूक के साथ हुए युद्ध में प्रदर्शित वीरता के कारण इनका लेफ्टिनेंट जनरल की उपाधि प्रदान की गई, परंतु इन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया और पेरिस में तीन वर्ष तक शांतिपूर्वक दर्शनशास्त्र की साधना करते रहे। प्रकृति के भेदों की गणित के नियमों से तुलना करने पर इन्होंने आशा प्रकट की कि दोनों के रहस्यों का ज्ञान एक ही प्रकार से किया जा सकता है। इस भाँति इन्होंने तत्वज्ञान में 'कार्तेज़ियनवाद' का आविष्कार किया।

गणित को इनकी सर्वोत्तम देन है वैश्लेषिक ज्यामिति। १६३७ ई. में प्रकाशित इनके "दिस्कूर द ला मेतौद्' (Discours de la Methode) में ज्यामिति पर भी १०६ पृष्ठ का एक

निबंध था। इन्होंने समीकरण सिद्धांत के कुछ नियमों का भी अविष्कार किया, जिनमें "चिन्हों का नियम' अत्यंत प्रसिद्ध है। ११ फ़रवरी १६५० को इनकी मृत्यु हो गई।

रेने डेकार्ट ने दार्शनिक जीवन में आने से पहले एक सैनिक के रूप में जीवन बिताया था। एकांतप्रिय होने के कारण उन्होंने लगभग 40 बार अपना मकान बदला, क्योंकि लोगों से जान–पहचान करना और मेल–जोल करना उन्हें पसंद नहीं था। रेने डेकार्ट को आधुनिक दर्शन का पिता कहा जाता है। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं– 'दार्शनिक पद्धति पर विचार', 'प्राथमिक दर्शन पर मनन' और 'दर्शन के सिद्धांत'। डेकार्ट को उनके दर्शन की अपेक्षा उनकी पद्धति और मौलिक सिद्धांतों के कारण अधिक ख्याति प्राप्त हुई। देकार्ट गणित विषय के अत्यंत प्रेमी थे। गणित के नियम निश्चयात्मक थे, इसलिये गणित ने डेकार्ट को अपनी ओर खींचा। यह थोड़ा विचित्र लग सकता है कि डेकार्ट गणित प्रेमी होते हुए भी संदेहवाही विचारक हैं, किंतु असल में वे कट्टर बुद्धिवादी विचारक हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत– 'मैं सोचता हूँ, अतः मैं हूँ', उनके दर्शन की रीढ़ है।

000